

नगर
में आज

- ❖ माह का प्रादर्श: सुबह 11 बजे से, मानव संग्रहालय
- ❖ बुकारु बाल साहित्य महोत्सव का शुभारंभ: सुबह 11 बजे, भारत भवन
- ❖ चित्र प्रदर्शनी शलाका: दोपहर 0१ बजे से, जनजातीय संग्रहालय
- ❖ पुस्तक लोकार्पण: दोपहर 0३ बजे से, दुष्यंत संग्रहालय
- ❖ (यदि आप कोई कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं तो हमें मो. 9३१957३840 पर संपर्क करें)

सार समाचार

काव्य संग्रहों का लोकार्पण आज

भोपाल। शिवपुरी निवासी युवा कवि इन्द्र सिंह अरसेला को दो पुस्तकें का लोकार्पण, मुझे जीकर देखो का मौलिकारण, शनिवार 10 अक्टूबर को दोपहर 03 बजे से दुष्यंत कुमार संग्रहालय में होने जा रहा है। वागर्थ समूह द्वारा आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि नवगीत समालोचक वीरेन्द्र आरितिक (कानपुर) होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ गीतकार अतंक श्रीवास्तव करेंगे। सारस्वत अतित्थ के रूप में गीतकार कान्ति शुक्ला और वीरेन्द्र निहार्थ उपस्थित रहेंगे। संस्था के मनोज जैन 'मधुर ने बताया कि गीतकार महेश अग्रवाल और मधु शुक्ला लोकार्पित कृतियों पर समीक्षात्मक वक्तव्य देंगे। कार्यक्रम में डॉ. रामवल्लभ आचार्य, दिनेश प्रभात, ऋषि श्रृंगारी, राजेंद्र शर्मा, किशन तिवारी, राजेन्द्र गद्गानी, दिनेश मालवीय अश्क, ममता वाजपेयी, दीपक पंडित, सीमा शर्मा, हरिवल्लभ शर्मा, प्रतिभा द्विवेदी, प्रमोद जैन 'प्रेम, नीता सक्सेना, किशन तिवारी सहित कई रचनाकारों का रचना पाठ होगा। स्वागत वक्तव्य सुनील चतुर्वेदी देंगे और संचालन डॉ. अनिता तिवारी द्वारा किया जाएगा।

जीनगर समाज के मेधावी बच्चे सम्मानित

भापाल। राष्ट्रीय जीवनपर समाज
उत्थान एवं प्रोत्साहन समिति तथा
अखिल भारतीय जीवनपर इरिटेबल
एंड डेवलपमेंट ट्रस्ट के संयुक्त
तत्वावधान में समाज के मेधावी
विद्यार्थी एवं दानदत्ता सम्मान
समारोह आयोजित किया गया।
समारोह में समाज के 323 मेधावी
छात्र-छात्राओं एवं 92 दानदत्ताओं
का सम्मान किया गया। समारोह में
भगवान दास ढालिया एवं धृत्वीरार
चौहान को समाज में उल्लेखनीय
योगदान एवं सामाजिक सेवा के लिए
सम्मानित किया गया। इस अवसर
पर उपस्थित समाजबन्धुओं एवं
वरिष्ठजनों ने दोनों को बधाई एवं
शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में
भगवान दास ढालिया ने मंच संचालन
की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई।

जनजातीय चित्रकार बालमति तेकाम के चित्रों की प्रदर्शनी 30 तक

महाराष्ट्र की वारली और घड़वा शिल्प की झलक

मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय द्वारा प्रदेश के जनजातीय चित्रकारों को चित्र प्रदर्शनी और चित्रों की बिक्री के लिये सार्थक मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रतिमाह 'खिलन्दर प्रदर्शनी' दीर्घा में किया। एक जनजातीय चित्रकार की प्रदर्शनी सह विक्रय का संयोजन शलाका नाम से किया जाता है। इसी क्रम में 03 अक्टूबर, 2026 से गण्ड जनजाति की युवा चित्रकार बालमति तैकाम के चित्रों की प्रदर्शनी सह-विक्रय का संयोजन किया गया है। 78वीं शलाका चित्र प्रदर्शनी 30 अक्टूबर,

‘डॉ. उपासना सम्मान’ से सम्मानित होगा कायस्थ समाज का नीट टॉपर



मोपाल। सामाजिक संस्था कायस्थम के तत्वावधान में 'डॉ. उपसना सक्सेना प्रेरणा पुंज द्वारा प्रति वर्ष चित्रांश विद्यार्थी को प्रेरणा अर्वाँद दिये जाने की घोषणा की गई है। इस साल की नीट परीक्षा में सर्वोच्च अंक लेकर मध्यप्रदेश के किसी भी चिकित्सा महाविद्यालय में एम.बी.बी.एस. में प्रवेश लेने वाले चित्रांश विद्यार्थी को कायस्थम यह अर्वाँद देगा। अर्वाँद के लिए कायस्थ छात्र अथवा छात्रा द्वारा एमबीबीएस में प्रवेश हेतु नीट परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रदेश के किसी चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया हो। चर्यन्त प्रतिभागी को कायस्थ के जनवरी 2027 के वार्षिक कार्यक्रम में सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह एवं रु.5000 की सम्मान निधि भेंट की जाएगी। पात्र उम्मीदवार 30 अक्टूबर तक प्रविष्टि अध्यक्ष-कायस्थम, 55 अमलतास फेस 2, चूना भट्टी के पते पर भेज सकते हैं।

सारांश अग्रवाल का विकसित भारत प्रतियोगिता में चयन

भोपाल। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा मेरा युवा भारत के माध्यम से आयोजित विकसित भारत यूंग लीडर्स डायलॉग-2027 की प्रथम चरण की विकसित भारत विभव प्रतियोगिता में चयनित होकर बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय (बीयू), भोपाल के एमए सोशल वर्क के छात्र सरिषा अग्रवाल ने प्रतियोगिता के दूसरे चरण विकसित भारत निबंध चैलेंज के लिए क्वालीफाई किया है।

रवीन्द्र भवन
में नाटक 'सहयात्रा'
के साथ करुणेश
नाट्य समारोह
का समापन



स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

एक ओर पति-पत्नी के सपनों और महत्वाकांक्षाओं का टकराव रिश्ते को टूटने का कारण बन लेता है। दूसरी ओर मुश्किल घड़ी में पत्नी का साथ देने के बजाय पति ने उसी पर सवाल खड़े कर दिए। वहीं अहंकार रिश्ते पर भारी पड़ा, तो वहीं अदालत में तलाक की

सुनवाई के दौरान हुई बातचीत ने बिखरते परिवार को फिर जोड़ दिया। तीन दंपतियों के जीवन में आए ऐसे उतार-चढ़ाव शुक्रवार को रवींद्र भवन में मंचित नाटक सहयात्रा के जरिए सामने आए। कलामार्ग ने वैवाहिक जीवन में संवाद की कमी, सामाजिक दबाव और संकीर्ण मानसिकता के इस उपजने वाले संघर्षों को भ्रातृशाली ढंग से प्रस्तुत किया। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के

सहयोग से आयोजित करुणेश नाट्य समारोह का समापन मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय की थियेटर लैब की इस प्रस्तुति के साथ हुआ।

સ્ત્રાઉદવાદી સોચ પર સવાલ

नाटक में चित्रकार श्रीकार और नेहा की अलग-अलग महत्वाकांक्षाएं उनके रिश्ते में दूरियां पैदा करती हैं और दोनों अलग होने का निर्णय लेते

१. ज्ञात-अज्ञात पितरों के नाम पर तर्पण और ब्राह्मण भोज

दाई, कल से विराजेगी मातारानी



यह कर्म करने का
इस दिन पितरों के
ब्राह्मण भोज और
ष महत्व माना जाता

रात्रि से लग चुकी है अमावस्या

पंचांग के अनुसार अमावस्या तिथि 9 अक्टूबर की रात 9 बजकर 35 मिनट से शुरू होकर 10 अक्टूबर की रात 9 बजकर 19 मिनट तक रहेगी। उदया तिथि के आधार पर 10 अक्टूबर को ही सर्वपितृ अमावस्या का श्राद्ध किया जाएगा। इसी दिन विधि-विधान से पितरों का तर्पण कर उन्हें विदाई दी जाएगी।

कल से शारदीय नवरात्र

अमावस्या के आलेख दिन प्रतिपदा 11 अक्टूबर से शारदीय नवरात्र पर्व शुरू होगा। इस दौरान देवी भक्त माता की भक्ति में लीन रहेंगे। प्रतिपदा 11 अक्टूबर को घटस्थापना के साथ नवरात्र पर्व शुरू होगा। नवरात्र के दौरान मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठान किए जाएंगे। पूरे नौ दिनों तक भक्तजन देवी के नौ रूपों की पूजा करेंगे।

कोई घर रैंप पर बिखरे फैशन के रंग, ग्लेम-2026
में 55 प्रतिभाओं ने दिखाया हुनर



स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

हैं। वहीं, राघवेन्द्र अपनी पत्नी करुणा के यौ-
 उत्पीडन का शिकार होने के बाद उसे स्वीकार
 करने के बजाय तलाक मांगता है। करुण
 अदालत में इस मानसिकता का विरोध करती
 और न्यायाधीश को उसी तलाक याचिका
 खारिज कर देते हैं। तीसरी कहानी धनंजय औ-
 मंजरी की है। पारिवारिक हस्तक्षेप औ-
 जिम्मेदारियों के दबाव में दोनों अलग होने क
 फैसला करते हैं, लेकिन अदालत में सुनवाई के
 दौरान एक-दूसरे की भावनाओं को समझ-
 लहते हैं। आखिरकार दोनों तलाक को अज-
 वापस लेकर अपने रिश्ते को नया अवसर दे-
 हैं। नाटक में संदेश दिया कि वैवाहिक संबंध
 की मजबूती आपसी सम्मान, विश्वास औ-
 संवाद में निहित है।

रूप पर आत्मविश्वास से भरे कदम, आकर्षक परिधानों की चमक और प्रतिक्रिया के शानदार प्रदर्शनों के बीच 'मिस टीन एंड मिसर मध्यप्रदेश ग्लेम-2026', 'मिस भोपाल ग्लेम-2026 एवं 'नितिल्ल स्टार मिस इंडिया का ग्रैंड फिनाले' होटल हयात में आयोजित किया गया। फैशन, व्यक्तित्व और रचनात्मकता के इस संगम में प्रतिभागियों ने अपने हुनर और आत्मविश्वास से उपस्थित लोगों का ध्यान आकर्षित किया। समारोह के मुख्य अतिथि एम्सीलेंसी टाइम एंटरटेन्मेंट के प्रबंध संचालक और सेलिब्रिटी प्रमोटर हीरालोक जटिया ने विजेताओं को क्राउन पहनाकर में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। फैशन शो को चार चरणों में विभाजित किया गया था। पहले चरण में इंडियन ब्राइडल, दूसरे में वेस्टर्न, तीसरे में परफार्मेंस और चौथे चरण में डेज काफेर्ट डेसेंस के साथ प्रश्नोत्तर राउंड आयोजित किया गया। प्रतियोगिता में मिस/मिस टीन मध्यप्रदेश ग्लेम श्रेणी में मिस कशिश किसानी और मिस अनुका विपारी विजेता रही। मिस सूरज सध्या और नितिका सिंह ने प्रथम स्थान पर, जबकि मिस अमृता चौधरी और निहारिका पालिवाल ने द्वितीय रनर-अप का स्थान प्राप्त किया। मिस रोनाल ग्लेम श्रेणी में मिस तुलसी देवमुख विजेता बनीं।

राजधानी में अंतर्राष्ट्रीय श्रीरामलीला उत्सव 12 से

पांच से अधिक देशों के विद्वान एवं कलाकार होंगे शामिल

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

संस्कृति विभाग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने 'अंतर्राष्ट्रीय श्रीरामलीला उत्सव इस वर्ष भी 12 से 18 अक्टूबर तक रवीन्द्र भवन में आयोजित किया जा रहा है। उत्सव श्रीरामचंद्र पथ गमन न्यास तथा संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। यह उत्सव श्रीराम कथा के विविध प्रसंगों को बहुकलाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा। इसके साथ ही श्रीरामलीला उत्सव का आयोजन 11 से 13 अक्टूबर तक

नान्न शैलियों में लीला प्रदर्शन
के साथ होंगे बौद्धिक सत्र

प्रदेश के अन्य स्थानों में भी किया जा रहा है। इसके अंतर्गत श्रीराम राजा मंदिर परिसर, ओरछा एवं 13 से 19 अक्टूबर तक राघव प्रयाग घाट, निचकूट में भी किया जा रहा है। श्रीरामलीला उत्सव इस वर्ष न सिर्फ़ लीला प्रदर्शन तक सीमित रहेगा, बल्कि विविध कला विधाओं के माध्यम से श्रीरामकथा प्रसंगों को प्रदर्शित किया जाएगा। इसमें लीला प्रदर्शन के साथ ही बौद्धिक सत्र, स्टोरी टेलिंग सेशन, प्रदर्शिनियाँ, कला शिविर, कला कार्यशाला, कठपुतली प्रदर्शन, भजन जैमिंग केन्द्रित गतिविधियाँ आयोजित की जाएँगी। उन्होंने बताया कि भोपाल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय श्रीरामलीला उत्सव का शुभारंभ 12 अक्टूबर को सायं 7 बजे मुक्ताकाश में, रवीन्द्र भवन में होगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रमुख रूप से उपस्थित रहेंगे। साथ ही प्रबुद्ध विचारक डॉ. इंद्रेश कुमार, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली की अध्यक्ष डॉ. संध्या पुरेचा भी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। सात दिवसीय श्रीरामलीला उत्सव में प्रतिदिन अलग-अलग नृत्य शैली में श्रीरामकथा के अलग-अलग प्रसंगों को प्रदर्शित किया जाएगा।



असाध्य रोग मिटाओ अभियान



विदेशी ताकतों के भरोसे कांग्रेस

दुनिया के सबसे धनी कारोबारी एलन मस्क द्वारा भारतीय नियामक प्रक्रियाओं पर सवाल उठाना और यह पूछना कि ‘क्या अंबानी भारत के असली बॉस हैं?’, केवल एक कॉर्पोरेट निराशा नहीं, बल्कि एक विदेशी कॉरपोरेशन की आक्रामक कूटनीति का खुला प्रदर्शन है। उससे भी अधिक चिंताजनक दृश्य तब पैदा हुआ जब देश के मुख्य विपक्षी दल के शीर्ष नेता राहुल गांधी ने इस टिप्पणी पर मस्क का स्वागत किया और बात को ‘अडानी’ तक खींच ले गए। राहुल गांधी ने यहां तक लिखा कि भारत में स्टार लिंक के लिए आपको दूसरे प्रधानमंत्री तक का इंतजार करना होगा। विदेशी ताकतों के सुर में सुर मिलाना न केवल भारत की संप्रभुता के विरुद्ध है अपितु यह उस खतरनाक सोच की ओर संकेत है, जिसमें कहा जाता है- ‘दुश्मन का दुश्मन, अपना दोस्त’। कांग्रेस और उसके नेताओं की यह कैसी सोच है, जिसमें अपने देश के उद्योगपतियों को खलनायक बनाया जाता है और विदेशी उद्योगपति का स्वागत किया जाता है। सोशल मीडिया से लेकर सामाजिक विमर्श में राहुल गांधी की इस सोच की जमपक आलोचना हो रही है। यह स्वाभाविक ही है। एक देशभक्त नागरिक कभी भी इस प्रकार की हरकत का स्वागत नहीं कर सकता। कांग्रेस को समझना चाहिए कि चुनाव आयोग उनके ‘वोट चोरी’ नहीं कर रहा है अपितु उनके शीर्ष नेताओं के आचरण से ही जनता में कांग्रेस के प्रति आक्रोश पैदा हो रहा है। प्रधानमंत्री बनने के लिए तड़प रहे राहुल गांधी को भी समझना चाहिए कि प्रधानमंत्री बनने की राजनीतिक महत्वाकांक्षा हर नागरिक का अधिकार हो सकती है, लेकिन जब विदेशी दबाव और घरेलू नीतियों का टकराव हो, तब राष्ट्रीय हित हर दलीय स्वार्थ से ऊपर होना चाहिए। स्मरण रहे कि भारत का इतिहास गवाह है कि जब-जब आंतरिक सत्ता संघर्ष में विदेशी ताकतों की मध्यस्थता या समर्थन को सहज स्वीकार्यता दी गई, देश को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। ईस्ट इंडिया कंपनी किसी सैन्य आक्रमण के जरिए नहीं, बल्कि तत्कालीन शासकों और अस्तुत्पुट दावेदारों के आपसी अंतर्विरोधों का लाभ उठाकर भारतीय बाजार और सत्ता तंत्र पर काबिज हुई थी। आज 21वीं सदी में जब डिजिटल संप्रभुता, डेटा सुरक्षा और टेलीकॉम स्पेक्ट्रम देश की नई सामरिक सीमाएं बन चुके हैं, तब किसी अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी के दबाव तंत्र का हिस्सा बनना न केवल अदूरदर्शिता है, बल्कि संप्रभुता के साथ समझौता भी है। टेलीकॉम स्पेक्ट्रम का आवंटन हो या स्टारलिंक जैसी सैटेलाइट इंटरनेट सेवाओं की भारत में प्रवेश, यह किसी एक उद्योगपति बनाम दूसरे की लड़ाई नहीं है। यह भारत के 140 करोड़ नागरिकों के डेटा संप्रभुता, स्थानीय सुरक्षा मानकों और रणनीतिक आत्मनिर्भरता का विषय है। यदि सरकार की किसी नीति या प्रक्रिया में खामिई है, तो विदेश का दायित्व एक ठोस नीतिगत दस्तावेज, संसदीय बहस या सार्वजनिक चर्चा के जरिए सवाल खड़े करना है। नीतिगत तर्कों के बजाय ‘शुनु का शुनु मेरा मित्र’ वाली मुद्रा अपनाकर विदेशी कॉरपोरेट ब्लैकमेलिंग का स्वागत करना गंभीर राजनीतिक परिपक्वता का अभाव दर्शाता है। विदेशी राजनीति की एक सुदीर्घ और गौरवशाली परंपरा रही है कि रक्षा, विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में दलगत सीमाएं मिट जाती थीं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मोरारजी देसाई के शासनकाल में जेल जाने के बावजूद विदेशी धरती पर घरेलू सरकार की आलोचना से परहेज किया था। इसी तरह नरसिम्हा राव ने संयुक्त राष्ट्र में भारत का पक्ष रखने के लिए विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को भेजा था। सतएत क्षणभंगुर होती हैं, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री आते-जाते रहते हैं, परंतु राष्ट्र का संस्थागत ढांचा और उसकी स्वायत्तता शाश्वत रहनी चाहिए। दुर्भाग्य से, समकालीन राजनीति में घरेलू असंतोष को अंतर्राष्ट्रीय विमर्श में भुनाने और संवैधानिक संस्थाओं की साख पर निरंतर आघात करने की होड़ मची है।

नेताओं के आचरण से ही जनता में कांग्रेस के प्रति आक्रोश पैदा हो रहा है। प्रधानमंत्री बनने के लिए तड़प रहे राहुल गांधी को भी समझना चाहिए कि प्रधानमंत्री बनने की राजनीतिक महत्वाकांक्षा हर नागरिक का अधिकार हो सकती है, लेकिन जब विदेशी दबाव और घरेलू नीतियों का टकराव हो, तब राष्ट्रीय हित हर दलीय स्वार्थ से ऊपर होना चाहिए। स्मरण रहे कि भारत का इतिहास गवाह है कि जब-जब आंतरिक सत्ता संघर्ष में विदेशी ताकतों की मध्यस्थता या समर्थन को सहज स्वीकार्यता दी गई, देश को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। ईस्ट इंडिया कंपनी किसी सैन्य आक्रमण के जरिए नहीं, बल्कि तत्कालीन शासकों और अस्तुत्पुट दावेदारों के आपसी अंतर्विरोधों का लाभ उठाकर भारतीय बाजार और सत्ता तंत्र पर काबिज हुई थी। आज 21वीं सदी में जब डिजिटल संप्रभुता, डेटा सुरक्षा और टेलीकॉम स्पेक्ट्रम देश की नई सामरिक सीमाएं बन चुके हैं, तब किसी अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी के दबाव तंत्र का हिस्सा बनना न केवल अदूरदर्शिता है, बल्कि संप्रभुता के साथ समझौता भी है। टेलीकॉम स्पेक्ट्रम का आवंटन हो या स्टारलिंक जैसी सैटेलाइट इंटरनेट सेवाओं की भारत में प्रवेश, यह किसी एक उद्योगपति बनाम दूसरे की लड़ाई नहीं है। यह भारत के 140 करोड़ नागरिकों के डेटा संप्रभुता, स्थानीय सुरक्षा मानकों और रणनीतिक आत्मनिर्भरता का विषय है। यदि सरकार की किसी नीति या प्रक्रिया में खामिई है, तो विदेश का दायित्व एक ठोस नीतिगत दस्तावेज, संसदीय बहस या सार्वजनिक चर्चा के जरिए सवाल खड़े करना है। नीतिगत तर्कों के बजाय ‘शुनु का शुनु मेरा मित्र’ वाली मुद्रा अपनाकर विदेशी कॉरपोरेट ब्लैकमेलिंग का स्वागत करना गंभीर राजनीतिक परिपक्वता का अभाव दर्शाता है। विदेशी राजनीति की एक सुदीर्घ और गौरवशाली परंपरा रही है कि रक्षा, विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में दलगत सीमाएं मिट जाती थीं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मोरारजी देसाई के शासनकाल में जेल जाने के बावजूद विदेशी धरती पर घरेलू सरकार की आलोचना से परहेज किया था। इसी तरह नरसिम्हा राव ने संयुक्त राष्ट्र में भारत का पक्ष रखने के लिए विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को भेजा था। सतएत क्षणभंगुर होती हैं, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री आते-जाते रहते हैं, परंतु राष्ट्र का संस्थागत ढांचा और उसकी स्वायत्तता शाश्वत रहनी चाहिए। दुर्भाग्य से, समकालीन राजनीति में घरेलू असंतोष को अंतर्राष्ट्रीय विमर्श में भुनाने और संवैधानिक संस्थाओं की साख पर निरंतर आघात करने की होड़ मची है।

अमृत कलश

नवरात्र: मां की भक्ति से भीतर की यात्रा तक।

आज से मां भगवती की आराधना शुरू हो रही है। नवरात्रि केवल मां दुर्गा की पूजा और उपवास के नौ दिन नहीं हैं, बल्कि अपने भीतर उतरने, स्वयं को समझने और अंतर्मन को शुद्ध करने का अवसर भी है। मेरे गुरुदेव कहते हैं कि मां के ये नौ रूप मनुष्य के भीतर सोई हुई नौ शक्तियों को जगाने के प्रतीक हैं।

पहला स्वरूप मां शैलपुत्री का है, जिनकी आराधना से ‘मन मे स्थिरता’ आती है। दूसरा मां ब्रह्मचारिणी का है, जो हमें ‘साधना और धैर्य की शक्ति’ देती हैं। तीसरा मां चंद्रघंटा का स्वरूप जीवन में ‘जागरूकता’ का प्रतीक है। चौथा मां कूप्मांडा ‘सृजन की शक्ति’ जगाती है। पांचवां मां स्कंदमाता ‘करुणा का भाव’ देती हैं। छठा मां कात्यायनी ‘साहस’ की शक्ति का प्रतीक हैं। सातवां मां कालारत्रि ‘भीरती की अशुद्धियों को दूर कर निर्मलता’ की ओर ले चलती हैं। आठवीं मां महागौरी निर्भरता’ का संदेश देती हैं। और नौवां मां सिद्धिदात्री ‘कार्य को पूर्णता तक पहुंचाने’ की शक्ति का प्रतीक हैं। इस दृष्टि से देखें तो नवरात्रि केवल देवी की पूजा करने का समय नहीं है। यह अपने भीतर इश शक्तियों को जगाने का अवसर भी है।

नवरात्रि हमें यह भी याद दिलाती है कि जीवन का मूल तत्व शक्ति है। लेकिन शक्ति का अर्थ केवल बाहरी सामर्थ्य नहीं है। असली शक्ति है- अपने भीतर जागरूक होना, सही समय पर सही निर्णय लेना, कठिन परिस्थितियों में धैर्य रखना और दूसरों के प्रति करुणा बनकर रखना। मुझे लगता है कि भक्ति मनुष्य को जो सबसे बड़ी शक्ति देती है वह है- निर्भयता की। जब हम अपनी नीचावस्थाओं को समर्पित कर देते हैं तो मन का बोझ हल्का होने लगता है। मां का स्मरण करते हुए भीतर एक विश्वास पैदा होता है- ‘मैं अकेला नहीं हूँ, मां मेरे साथ हैं।’ शायद यही विश्वास जीवन के बहुत से भय और दुखों को छोटा कर देता है। नवरात्रि में लोग उपवास रखते हैं, उपवास का अर्थ केवल भोजन छोड़ना नहीं होना चाहिए। यदि संभव हो तो इन नौ दिनों में हमें कुछ और चीजों का भी व्रत लेना चाहिए- क्रोध का व्रत, लोभ का व्रत, अहंकार का व्रत, ईर्ष्या का व्रत, मोह का व्रत और अनावश्यक इच्छाओं का व्रत।

हम कुछ समय के लिए अपने भीतर की इन कमजोरियों को रोकने का प्रयास करें। किसी से क्रोध आए तो थोड़ा रुक जाएं। लोभ आए तो स्वयं को देखें। अहंकार उठे तो याद करें कि जीवन में जो कुछ मिला है, वह केवल हमारे प्रयासों का परिणाम न होकर मां की कृपा है।यही नवरात्रि की वास्तविक साधना हो सकती है।

बाहर दीपक जलाने के साथ यदि हम अपने भीतर भी जागरूकता का दीपक जला सकें, तो पूजा सच हो जाएगी।

बाहर मां की आरती के साथ यदि हमारे भीतर करुणा जाग जाए, तो आरती सार्थक हो जाएगी। बाहर उपवास के साथ यदि हम अपने क्रोध और अहंकार को थोड़ा रोक सकें, तो उपवास सार्थक हो जाएगा। और मंदिर में मां के सामने सिर झुकाने के साथ यदि हम अपने भीतर के अहंकार को भी झुका सकें, तो शायद यही सबसे बड़ी पूजा होगी।

नवरात्रि का वास्तविक संदेश यही है-बाहर की पूजा भीतर के मिलन की तैयारी है। दीपक, आरती, मंत्र, उपवास और हवन- ये सब साधन हैं। साध्य है एक दिव्य चेतना के साथ संतुलित और सार्थक जीवन। अतएव नवरात्रि को केवल नौ दिनों का भक्ति पर्व न मानें। इसे अपने जीवन को थोड़ा और शांत, थोड़ा और निर्मल, थोड़ा और करुणामय और थोड़ा और जागरूक बनाने का अवसर मानें।

विचार प्रवाह

देश का औसतन युवा देशभक्त और अपने विवेक पर भरोसा करने वाला है

विवाद युक्त नहीं, संस्कार युक्त हों हमारे परिसर

संजय उवाच

हमारे कुछ शिक्षा परिसर इन दिनों विवादों में हैं। ये विवाद कुछ प्रयोजित भी हैं, तो कुछ वास्तविक भी। विचारधाराएं परिसरों को आक्रांत कर रही हैं और राजनीति भयभीत। जैसी राजनीति हो रही है, उससे लगता है कि ये परिसर देश का प्रतिपक्ष हैं। जबकि यह पूरा सच नहीं है। कुछ मुद्दे भर लोग भारतीय युवा और उसकी समझ को चुनौती नहीं दे सकते। देश का औसतन युवा देशभक्त और अपने विवेक पर भरोसा करने वाला है। उसे अपने देश की शक्ति और कमजोरियों का पता है। वह भावुक है, पर भावनात्मक आधार पर फैसले नहीं लेता। दुनिया की चमकीली प्रगति से चमत्कृत भी है, पर इसके पोछे छिपे अंधेरों को भी पहचानता है।

कई स्थानों से यह विमर्श सुनने में आता है कि शिक्षा परिसरों को राजनीति मुक्त कर देना चाहिए और विद्यार्थी सिर्फ पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दें। उन्हें राजनीति से क्या मतलब? जबकि यह सोच एकांगी है। देश के महत्वपूर्ण छात्र संगठन अखिलभारतीय विद्यार्थी परिषद का मानना है कि ‘छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है।’ अतएव छात्र शक्ति को सही मार्गदर्शन देते हुए राष्ट्रहित में उसका योगदान सुनिश्चित करना जरूरी है। हम एक लोकतांत्रिक समाज में रहते हैं, हमारे परिसर भी इसी व्यवस्था का हिस्सा हैं। राजनीति, छात्रों का इस्तेमाल कर अपने वोट बैंक को मजबूत तो करना चाहती है, किंतु छात्रसंघों के चुनाव अनेक

राज्यों में प्रतिबंधित हैं। छात्रसंघों से राजनीति और सत्ता को घबराहत होती है। यहां तक कि जो राजनेता छात्रसंघों के माध्यम से राजनीति में आए, वे भी छात्रसंघों के प्रति उदार नहीं हैं। होना यह चाहिए कि छात्रसंघ विद्यार्थियों के सांस्कृतिक, वैचारिक और राजनीतिक रुझानों के विकास में सहायक बनें। ताकि छात्र नेतृत्व और उसकी गंभीरता को समझकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें। छात्रसंघ और छात्र राजनीति कहीं न कहीं इस भूमिका से विरत हुये हैं, इसलिए देश के राजनेताओं व अन्य प्रशासकों को इनका गला दबाने का अवसर मिला। कहा जाता है कि इसके चलते परिसर में तनाव और हिंसाचार भी बढ़ता है। हम देखते हैं कि जब अनेक बुराईयों के बावजूद भी हम संसदीय राजनीति के खिलाफ नहीं हो जाते, बल्कि उसमें सुधार का ही प्रयास करते हैं। इसी तरह छात्रसंघों के रचनात्मक इस्तेमाल की भूमिका बनाने के बजाए, उनका गला दबा देने का विचार लोकतांत्रिक नहीं है। हमें देखना होगा कि छात्र संगठन क्यों राजनीतिक दलों के हस्तक बन रहे हैं। सभी प्रकार के आंदोलनों की तरह छात्र आंदोलन भी मर रहे हैं। विचारधारा के आधार पर विभाजित राजनीति कब पंथ और जाति की गलियों में भटक जाती है, कहा नहीं जा सकता।

ऐसे समय में शिक्षकों, शिक्षाविदों और परिसरों को जीवंत देखने का आकांक्षा रखने वाले लोगों की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। सत्ता- राजनीति तो चाहती ही है कि परिसरों में फेयरवेल पार्टियां हों, फ्रेशर्स पार्टियां हों, मनोरंजन प्रधान आयोजन हों। किंतु ऐसे आयोजन जिससे बहस का प्रारंभ हो, नए विचार सृजित



आतंक की जगह बनेंगे। राज्य की ताकत को हम जानते हैं, इसलिए परिसर विमर्शों का केन्द्र तो बनें, किंतु देश तोड़कों की पनाहगाह नहीं। अपने शोध-अनुसंधान और शिक्षण-प्रशिक्षण से हमें इस देश को बनाना है, बर्बाद नहीं करना है, यह सोच हमेशा केन्द्र में रहनी चाहिए। कोई भी विश्वविद्यालय अपने अध्यापकों और विद्यार्थियों के अवदान से ही बड़ा बनता है। हमें हमारे परिसरों को जीवंत बनाने के लिए इन्हें दो पर ध्यान देना होगा। ऊर्जावान, नए विचारों से भरे हुए अध्यापक ही अपने विद्यार्थियों को नई रोशनी दे सकते हैं। वे ही नवाचारों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं।

कोई विद्यार्थी जब किसी भी परिसर में आता है तो एक उम्मीद के साथ आता है। उसे अपनी दल का कैडर बनाने के बजाए, एक विचारवान नागरिक बनाना, शिक्षकों का पहला कर्तव्य है। वे उसे आंखें दंपर उधार की आंखें न दें। शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे चाणक्य बनें और उनके विद्यार्थी चंद्रगुप्त। अध्यापकों के सामने

यह लेखक के निजी विचार हैं

जब इंदिरा गांधी ने जेपी के नाम पर झूठ बोला

(आज 10 अक्टूबर को जयप्रकाश नारायण और नानाजी देशमुख का जन्मदिन है। भ्रष्टाचार और तानाशाही खिलाफ बिहार आन्दोलन में इन दोनों की अहम भूमिका थी। इंदिरा गांधी ने जब इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद अपनी कुर्सी बचाने के लिए आपातकाल लगाने का फैसला किया तो उन्होंने जयप्रकाश नारायण के बयान को आपातकाल का आधार बनाया था, जो पूरी तरह झूठ था। उसी झूठ पर से पर्दा उठाता मेरे पुस्तक “ आपातकाल : आन्दोलन और विश्वासघात की अंतर्कथा का यह अंश : अजय सेतिया)

इंदिरा गांधी ने 26 जून को कैबिनेट के सामने तर्क दिया था कि उन्होंने जयप्रकाश नारायण के सेना को भड़काने वाले भाषण के कारण आपातकाल लगाने की सिफारिश की थी, लेकिन आपातकाल की ज्यादातियों की जांच के लिए बने ‘शाह के अयोध्या’ के सामने सिद्धार्थ शंकर रे की गवाही ही उनके इस दावे को धराशायी करती है। सिद्धार्थ शंकर रे ने शाह आयोग के सामने कहा कि असल में वह इंदिरा गांधी के साथ 25 जून को सुबह 9 बजे राष्ट्रपति से मिलने गए थे, तभी रास्ते में इंदिरा गांधी ने पूछा कि क्या राष्ट्रपति बिना कैबिनेट की मंजूरी हुए आंतरिक आपातकाल लागू कर देंगे। इस पर सिद्धार्थ शंकर ने उन्हें इस पक्ष पर कानूनी राय लेने के लिए कुछ वक्त मांगा, तो वे रास्ते से ही प्रधानमंत्री आवास लौट आये। बाद में उन्होंने इंदिरा गांधी को बताया कि कार्य संचालन नियमावली के नियम 12 के मुताबिक वे कैबिनेट बैठक से पहले भी राष्ट्रपति से आग्रह कर सकती हैं। शाम को जब वे दोनों राष्ट्रपति से मिले तो आपातकाल की सिफारिश में जयप्रकाश नारायण के भाषण को मुख्य आधार बना दिया गया था, जबकि आपातकाल लगाने का फैसला 24 जून को ही ले लिया गया था।

उस समय के वरिष्ठ पत्रकार डी.आर. मानकेकर ने अपनी पुस्तक ‘डेकलाइन एंड फॉर आफ इंदिरा गांधी’ में लिखा है कि जयप्रकाश नारायण का भाषण खत्म होने के बाद रात करीब साढ़े आठ बजे सिद्धार्थ शंकर रे को अपने साथ लेकर इंदिरा गांधी राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से मिलीं। (सिद्धार्थ शंकर रे उस समय कैबिनेट के मंत्री भी नहीं थे, वह पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री थे) और उन्हें जयप्रकाश नारायण की ओर से देश की सेना को सरकार के आदेश न मानने की सलाह देने का हवाला देते हुए देश के हालात का ब्योरा दिया। (जबकि जेपी ने पुलिस से कहा था कि वह शासन के अवैध आदेशों को न माने, उन्होंने संवैधानिक आदेशों को न मानने के लिए नहीं कहा था, जेपी को अदेश था कि इंदिरा गांधी अपने विरोधियों के खिलाफ सेना का भी इस्तेमाल कर सकती हैं, जो लोकतंत्र के लिए बहुत घातक होगा, इसलिए जेपी ने कहा था कि सेना को भी अगर असंवैधानिक आदेश दिए जाते हैं तो वे उन आदेशों को न माने जेपी का यह कथन देश के लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए था, न कि संविधान के खिलाफ- पेज 43) उन्होंने राष्ट्रपति से कहा कि संविधान के अनुच्छेद 352 के अंतर्गत ‘आंतरिक आपातकाल’ लागू करना जरूरी हो गया है। वह इंदिरा गांधी की कृपा से ही राष्ट्रपति बने थे, उनका ना-नुकर करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद रात 11 बजे गृहमंत्री ब्रह्मानंद रे ड़्ठी को प्रधानमंत्री आवास बुलाया गया, जहां इंदिरा गांधी ने उन्हें ‘आंतरिक आपातकाल’ लगाने और राष्ट्रपति की सहमति की जानकारी दी। कई जगह पर यह जिक्र आया है कि गृहमंत्री के नाम से एक चिट्ठी टाइप

अर्पण - तर्पण श्रद्धेय मोरोपंत जी (मोरेश्वर नीलकंठ पिंगले)

पितृपक्ष के इस पावन अवसर पर, जब हम अपने पूजनीय पूर्वजों और वैचारिक मार्गदर्शकों का स्मरण कर उन्हें तर्पण अर्पित करते हैं, तब मां भारती के अनन्य उपासक और परम कर्मयोगी श्रद्धेय मोरोपंत जी (मोरेश्वर नीलकंठ पिंगले) का स्मरण स्वतः ही मन को अपार श्रद्धा और भावुकता से भर देता है।

30 अक्टूबर 1919 को जबलपुर के एक साधारण परिवार में जन्मे मोरोपंत जी ने बाल्यवस्था में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य सरसंचालक डॉ. केशवराव बलिराम हड़गेवार जी के पावन सान्निध्य में आकर राष्ट्र-साधना का व्रत ले लिया था। नागपुर के मॉरिस कॉलेज से उच्च शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात 1941 में उन्होंने अपने व्यक्तित्व जीवन का त्याग कर प्रचारक के रूप में मां भारती की सेवा का जो संकल्प लिया, उसे जीवन की अंतिम सांस तक 65 वर्षों तक पूर्ण निष्ठा से निभाया।

खण्डवा से आरंभ हुई उनकी यह साधना मध्य भारत,

महाराष्ट्र और पूरे देश में संगठन के विविध अखिल भारतीय दायित्वों को संभालते हुए निरंतर प्रखर होती गई। वे केवल एक महान संगठक ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और अस्मिता के सजग प्रहरी थे। छत्रपति शिवाजी महाराज के 300वें राज्याभिषेक का भव्य आयोजन हो, नागपुर का पावन ‘स्मृति-मंदिर’ निर्माण हो, अथवा आपातकाल के घनघोर अंधेरे में भूमिगत रहकर लोकतंत्र की रक्षा का संघर्ष-रर मोर्चे पर उनका नेतृत्व अतुलनीय रहा।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए उनके द्वारा चलाई गई ‘एकात्मता यात्रा’ और लुप्त हुई वैदिक सरस्वती नदी की

खोज हेतु किया गया ऐतिहासिक शोध अभियान भारतीय इतिहास को एक नई दिशा दे गया। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के मुख्य रणनीतिकार के रूप में श्रीराम शिला पूजन और शिलान्यास जैसे पावन आयोजनों का मार्गदर्शन कर उन्होंने संपूर्ण भारतवर्ष को भक्ति और राष्ट्रीयता के एक अटूट सूत्र में पिरो दिया। 21सितंबर 2003 को नागपुर की पावन भूमि पर मोरोपंत जी का भौतिक शरीर भले ही शांत हो गया, किंतु उनका त्याग, उनकी दूरदर्शिता और राष्ट्र-साधना की अमर ज्योति आज भी हम सभी का मार्गदर्शन कर रही है।

इस पवित्र पितृपक्ष में, मां भारती के इस महान सपूत, राष्ट्र-शिल्पी और हमारे वैचारिक पितृ-तुल्य श्रद्धेय मोरोपंत जी पिंगले के चरणों में हम कोटि-कोटि नमन करते हुए अपनी अश्रुपूर्ति और भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ॐ शांति: शांति: शांति: ॥

● **अमोल तपासे, नागपुर**

सर्वश्री डॉ. राधाकृष्णन, हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ.एपीजे अबुल कलाम, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, ज्योमाचरण दुबे, विद्यानिवास मिश्र जैसे अनेक उदाहरण हैं, जिसके सान्निध्य में जाकर कोई भी साधारण बालक भी एक असाधारण प्रतिभा में बदल जाता है। विद्यार्थी के इस रूपांतरण के लिए ऐसे शिक्षकों का राष्ट्र भी आदर करता है। गुरु-शिष्य परंपरे एसी हो, जिससे राष्ट्र के लिए हर क्षेत्र में नायक गढ़े जाएं।

सही बात तो यह है कि कुछ शिक्षकों को यह खबर ही नहीं कि उनके विद्यार्थी क्या कर रहे हैं, वे एक वेतन भोगी कर्मचारी की तरह अपनी कक्षा को बहुत निरपेक्ष तरीके से करते हुए, बस जिए जा रहे हैं तो कुछ ऐसे हैं, जिन्हें अपनी कक्षा से ही अपनी विचारधारा के लिए वैचारिक योद्धा और अपने राजनीतिक दल के लिए कैडर गढ़ने हैं। ऐसी दोनों प्रकार की अतियां गलत हैं। हमारी शिक्षा और उसकाव से हमारे किसी विद्यार्थी का जीवन बदल जाए तो ठीक है पर बिगड़ जाए तो...। हमारे क्रान्तिकारी विचार उस जेल की यत्राएं करावे दें, तो विचार करना होगा कि हमने शिक्षा में क्या गड़बड़ की है। हमारे विद्यार्थी हमारी अपनी संतानों की तरह हैं। हम उनसे वही अपेक्षा करें, वही मार्ग दिखाएं जिस पर हमारी अपनी संतानों के चलने पर हमें आपत्ति न हो। यही एक ही सूत्र है जो हमारी खुद की परीक्षा के लिए काफ़ी है। हमारे विद्यार्थी बहुत सी उम्मीदों, आशाओं, आकांक्षाओं और सपनों के साथ परिसर में आते हैं। उनके सपनों में रंग भरने की उन्हें ताकत देना, हम शिक्षकों की जिम्मेदारी है। दिल पर हाथ रखकर सोचिए कि क्या हम उनके साथ ऐसा कर पा रहे हैं। परिसरों को राजनीति मुक्त नहीं है, संस्कार युक्त बनाकर ही हम देश की प्रतिभाओं को उचित मंच दे पाएंगे। हम शिक्षकों ने आज ही यह शुरुआत नहीं की, तो कल बहुत देर हो जाएगी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए न्याय और सुरक्षा को सुदृढ़ करना एक संवैधानिक गारंटी

एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की नींव इस भरोसे पर टिकी होती है कि प्रत्येक नागरिक गरिमा, समानता और सुरक्षा के साथ जीवन यापन कर सके। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए यह प्रतिबद्धता मजबूत संवैधानिक सुरक्षा उपायों, प्रभावी कानूनों और उत्तरदायी संस्थाओं के माध्यम से ठोस रूप लेती है। इसलिए, भारत सरकार ने अत्याचारों की रोकथाम, पीड़ितों की सुरक्षा और समय पर न्याय सुनिश्चित करने के लिए कानूनी और संस्थागत प्रेमवर्क को लगातार मजबूत किया है। **न्याय के लिए एक अधिक सशक्त कानूनी फ्रेमवर्क**: जाति-आधारित अत्याचारों के प्रति संवेदनशील समुदायों की चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए एससी/एसटी (PoA) अधिनियम, 1989 में उल्लेखनीय विकास हुआ है। इस दिशा में एक बड़ा कदम 26 जनवरी 2016 से प्रभावी हुए संशोधनों के जरिए उठाया गया। इन संशोधनों में अपराधों की त्वरित सुनवाई के लिए अन्य विशेष न्यायालयों (Exclusive Special Courts) की स्थापना और अन्य विशेष लोक अभियोजकों की नियुक्ति का प्रावधान किया गया। अधिनियम में कई नए प्रकार के अधिनियमों को भी शामिल किया गया, जिससे एससी और एसटी समुदायों को उल्लंघन कानूनी सुरक्षा का दायरा व्यापक हुआ।

समय पर न्याय की उपलब्धता सुनिश्चित करना : 20 अप्रस्त 2018 को एससी/एसटी (PoA) अधिनियम में किए गए संशोधन के माध्यम से और भी महत्वपूर्ण बदलाव पेश किए गए। इस संशोधन ने इस कानून के तहत मामलों में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने से पहले प्रारंभिक जांच की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया। इसके अलावा, अधिनियम के तहत अपराध के आरोपी व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए पूर्व अनुमति की आवश्यकता को भी हटा दिया गया। उद्देश्य विस्तृत स्पष्ट था: प्रक्रियात्मक औपचारिकताएं एससी और एसटी के खिलाफ अत्याचार से जुड़े अपराधों के पंजीकरण, जांच और अभियोचना में बाधा नहीं बननी चाहिए। **त्वरित सुनवाई के लिए अन्य विशेष न्यायालयों का सुदृढ़ीकरण** : राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत अपराधों की सुनवाई के लिए 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 217 अन्य विशेष न्यायालय स्थापित किए जा चुके हैं। यह अधिनियम संविधान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की सहमति से, उन जिलों में सत्र



रामदास अठावले सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री

नागरिकों के निकट लाना : कानूनी सुरक्षा तभी सार्थक होती है जब नागरिक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और उचित सहायता प्राप्त कर सकें। इसे ध्यान में रखते हुए, 13 दिसंबर 2021 को एससी और एसटी पर अत्याचार के खिलाफ राष्ट्रीय हेल्पलाइन शुरू की गई, जिसे बंदी में 'संबल' नाम दिया गया।

जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन को सुदृढ़ बनाना : किसी भी कानून की प्रभावशीलता अंततः उसके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। इसलिए, सरकार ने हिंसाधरकों तथा संबंधित मंत्रालयों और विभागों के साथ परामर्श के बाद पीसीआर अधिनियम, 1955 और



एससी/एसटी अधिनियम, 1989 के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए योजना दिशानिर्देश जारी किए हैं।

पीड़ितों और सामाजिक समावेशन पर केंद्रित केंद्रीय सहायता : पीसीआर अधिनियम, 1955 और एससी/एसटी (PoA) अधिनियम, 1989 के कार्यान्वयन के लिए केंद्र प्रायोजित योजना प्रकल्पन तंत्र को मजबूत करने, पीड़ितों को राहत और पुनर्वास प्रदान करने तथा सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। वर्ष 2014-15 से अब तक इस योजना के तहत 5,012.17 करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता जारी की जा चुकी है। इस अवधि के दौरान, अत्याचार के लगभग 7,26,588 पीड़ितों को राहत प्रदान की गई है, जबकि 2,21,716 जोड़ों को हटा दिया गया। उद्देश्य विस्तृत स्पष्ट था: प्रक्रियात्मक औपचारिकताएं एससी और एसटी के खिलाफ अत्याचार से जुड़े अपराधों के पंजीकरण, जांच और अभियोचना में बाधा नहीं बननी चाहिए।

त्वरित सुनवाई के लिए अन्य विशेष न्यायालयों का सुदृढ़ीकरण : राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत अपराधों की सुनवाई के लिए 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 217 अन्य विशेष न्यायालय स्थापित किए जा चुके हैं। यह अधिनियम संविधान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की सहमति से, उन जिलों में सत्र

केंद्र में न्याय, गरिमा और समानता : एससी/एसटी अधिनियम और नियमों को सुदृढ़ करना, विशेष न्यायिक तंत्र की स्थापना, राहत और पुनर्वास प्रावधानों में वृद्धि, एक राष्ट्रीय हेल्पलाइन का गठन, कार्यान्वयन दिशानिर्देश जारी करना और निरंतर केंद्रीय वित्तीय सहायता-ये सभी मिलकर एससी और एसटी समुदायों की सुरक्षा को दिशा में एक व्यापक दृष्टिकोण तैयार करते हैं। भारत का संविधान और केंद्र, राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों के बीच घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता है।



सार समाचार

न्यूजीलैंड के पूर्व टेस्ट ओपनर जीत रावल ने लिया संन्यास

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड के पूर्व टेस्ट ओपनर जीत रावल ने प्रोफेशनल क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से संन्यास ले लिया है। 38 साल के रावल ने 2026-27 के घरेलू सीजन से पहले यह फैसला किया। गुजरात के अहमदाबाद में जन्मे रावल ने न्यूजीलैंड के लिए 2016 से 2020 के बीच 24 टेस्ट खेले। वे 2021 में वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप जीतने वाली न्यूजीलैंड टीम का हिस्सा भी रहे। क्रिकेट से संन्यास के बाद वे चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में काम जारी रखेंगे। वे पहले से एक ऑडिटिंग फर्म में सीए हैं। नार्दन डिस्ट्रिक्ट्स क्रिकेट एसोसिएशन को दिए इंटरव्यू में रावल ने कहा कि न्यूजीलैंड की राष्ट्रीय टीम के लिए खेलना उनका और उनके पिता का बचपन का सपना था।

वॉक्सर मैरी कॉम के खिलाफ मानहानि की शिकायत

ओलंपिक मेडलिस्ट वॉक्सर मैरी कॉम के खिलाफ उनके पूर्व पति करीग ओखोलेर (ऑनलर) ने मानहानि की शिकायत दर्ज कराई है। उनका आरोप है कि मैरी कॉम ने एक टीवी इंटरव्यू में उनकी छवि को नुकसान पहुंचाने वाली टिप्पणियाँ कीं। इसकी शिकायत 6 अक्टूबर को दिल्ली की सातवें कोर्ट में दर्ज की गई। मामला ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास शिवम गुप्ता की अदालत में श्री-सर्निंग एविडेंस के चरण में है। कोर्ट 19 नवंबर को इस पर सुनवाई करेगी। शिकायत के मुताबिक, 11 जनवरी 2026 को प्रसारित इंटरव्यू देरभर में लाखों दर्शकों तक पहुंचा था। ऑनलर का दावा है कि मैरी कॉम की टिप्पणियों से उनकी छवि बेइमान, बेवफा और शराबी व्यक्ति के रूप में पेश हुई।

ओलिंपिक से पहले हॉकी टीम में होंगे बड़े बदलाव

नई दिल्ली। एशियन गेम्स में गोल्ड मेडल जीतकर 2028 लॉस एंजेलिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम में बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं। हॉकी इंडिया चयन समिति के चेयरमैन डॉ. आरपी सिंह ने बताया कि ओलंपिक में यूरोपियन स्टाइल की हॉकी देखने को मिलेगी, जहाँ एक गलती भी भारी पड़ सकती है। यही वजह है कि टीम अब केवल नाम के आधार पर नहीं, बल्कि सख्त फिटनेस और प्रदर्शन के मानकों पर ही खिलाड़ियों को जगह मिलेगी। मानकों पर खरे न उतरने वाले खिलाड़ियों की जगह नए और युवा चेहरों को मौका दिया जाएगा।

भारतीय तीरंदाजों के कोच को 3 महीने से सैलरी नहीं

नई दिल्ली। भारत के कंपाउंड तीरंदाजी टीम के मुख्य कोच डेव कजिन्स पिछले 3 महीने से सैलरी नहीं मिलने से नाराज हैं। मई में कंपाउंड आर्चरी प्रोग्राम की जिम्मेदारी संभालने वाले अमेरिकी कोच ने बकाया भुगतान नहीं होने पर देश छोड़कर जाने की चेतावनी दी है। आर्चरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया और स्पোর্ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने भुगतान में देरी स्वीकार की है। दोनों संस्थाओं ने इसे तकनीकी समस्या बताया। साथ ही भरोसा दिलाया कि भुगतान की प्रक्रिया पूरी की जा रही है। भारत के कंपाउंड तीरंदाजों ने जापान में खेले गए एशियन गेम्स के तीनों टीम इवेंट में से, विमेंस और मिक्स्ड में गोल्ड जीते। वहीं इंडिविजुअल इवेंट में एक ब्रॉन्ज भी मिला। इसके साथ ही उन्होंने लॉस एंजेलिस ओलंपिक-2028 के लिए इवेंट का पहला कोटा हासिल किया।

भोपाल संभाग के तीन खिलाड़ियों का भारतीय वेटरन क्रिकेट टीम में चयन

सनी भटनागर, जतिन सक्सेना और मुर्तजा अली आईएमसी ओवर-40 विश्व कप में करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

खेल संवाददाता, भोपाल

भोपाल संभाग क्रिकेट संघ (बीडीसीए) के लिए गौरव की बात है कि संघ से जुड़े तीन प्रतिभाशाली खिलाड़ियों सनी भटनागर, जतिन सक्सेना और मुर्तजा अली का भारतीय 40 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की वेटरन क्रिकेट टीम में चयन हुआ है। तीनों खिलाड़ी आगामी आईएमसी ओवर-40 विश्व कप 2026 में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह विश्व कप 17 अक्टूबर से 1 नवंबर 2026 तक

वेस्टइंडीज ने 18.3 ओवर में 250 रन बनाकर जीता मैच, कप्तान शाई होप का शतक

भारत के खिलाफ टी20 में सबसे बड़ा रनचेज



मैन ऑफ द मैच शाई होप*

रन	चौके
102	06
गेंद	छक्के
45	09

6 विकेट के नुकसान पर 187 रन बनाए, कमिंस और रेंशॉ ने संभाला डरबन में पहले ही दिन कंगारू शीर्ष क्रम ध्वस्त

एजेंसी, डरबन

साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच डरबन के किंग्समीड स्टेडियम में खेले जा रहे पहले टेस्ट मैच का पहला दिन मेजबान टीम के नाम रहा। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम का टॉप-ऑर्डर पूरी तरह बिखर गया। खराब रोशनी के कारण पहले दिन का खेल समय से पहले समाप्त घोषित किए जाने तक ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट के नुकसान पर 187 रन बना लिए हैं। दिन का खेल खत्म होने तक कप्तान पैट कमिंस और मैट रेंशॉ क्रॉज पर टिके हुए हैं और दोनों ने मिलकर टीम को 200 के करीब पहुंचाकर राहत दी है। पैट कमिंस द्वारा टॉस जीतकर पहले

चावला और उजैर को द्वितीय कॉमनवेल्थ क्यू स्पोर्ट्स चैंपियनशिप में वाइल्ड कार्ड एंट्री

खेल संवाददाता, भोपाल

विश्व चैंपियन कमल चावला और उनके स्टूडेंट मोहम्मद उजैर को द्वितीय कॉमनवेल्थ क्यू स्पोर्ट्स चैंपियनशिप में वाइल्ड कार्ड एंट्री मिली है। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता वीर सावरकर स्टेडियम, अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित की जा रही है। इस चैंपियनशिप का आयोजन बिलियर्ड्स एंड स्नूकर फेडरेशन ऑफ इंडिया (BSFI) WCSB & WPA द्वारा किया जा रहा है। पिछले छह महीनों में दोनों खिलाड़ियों के शानदार और संभावनाओं से भरे प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें वाइल्ड कार्ड एंट्री प्रदान की गई है। कमल चावला और उजैर इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में हेबॉल पूल (Heyball Pool) स्पर्धा में भाग लेंगे। इस चैंपियनशिप में 38 कॉमनवेल्थ देशों के कुल 88 खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। स्पर्धा में हेबॉल पूल, स्नूकर, 10 बॉल पूल, ब्लैक बॉल पूल, कैरम बॉल पूल के इवेंट खेले जायेंगे, दोनों खिलाड़ियों की

गुयाना में आयोजित होगा। भारतीय टीम में चयनित तीनों खिलाड़ियों की उपलब्धि से भोपाल के क्रिकेट जगत में उत्साह का माहौल है। अनुभवी खिलाड़ियों के रूप में सनी भटनागर, जतिन सक्सेना और मुर्तजा अली से विश्व कप में भारतीय टीम के लिए बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है। उनका चयन भोपाल संभाग में क्रिकेट प्रतिभाओं और अनुभवी खिलाड़ियों की मौजूदगी को दर्शाता है। भारतीय टीम में शामिल खिलाड़ी: विश्व कप के लिए घोषित

एजेंसी, रांची

भारत के खिलाफ टी-20 में सबसे बड़ा रनचेज हो गया है। वेस्टइंडीज ने दूसरे मैच में 6 विकेट खोकर 250 रन का टारगेट हासिल कर लिया। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया ने 2023 में 223 रन चेज किए थे। रांची में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने 20 ओवर में 5 विकेट पर 249 रन बनाए। संजू सैमसन ने 41 बॉल पर 82 रन बनाए। उनके अलावा ईशान किशन ने 43 रन की पारी खेली। तिलक वर्मा 44 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने आखिरी ओवर में लगातार 3 सिक्स लगाए। कप्तान श्रेयस अय्यर ने 40 रन बनाए। जवाब में वेस्टइंडीज ने 18.3 ओवर में 4 विकेट खोकर 252 रन बनाकर जीत हासिल कर ली। कप्तान शाई ने 45 बॉल पर नाबाद 102 रन की पारी खेली। शेरेफेन रदरफोर्ड ने 37 बॉल पर 84 रन बनाए।

शाई होप ने 45 गेंदों में शतक जड़ा

वेस्टइंडीज ने 250 रन का टारगेट 18.3 ओवर में हासिल कर इतिहास रच दिया। टीम ने 6 विकेट से मुकाबला जीतकर 5 मैचों की सीरीज 1-1 से बराबर कर ली। कप्तान शाई होप ने सिर्फ 45 गेंदों में शतक पूरा किया। यह उनका टी-20 में दूसरा शतक है। होप ने अक्षर पटेल के ओवर में लगातार दो छक्के लगाकर टीम को जीत दिलाई। यह टी-20 इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा सफल रनचेज है। मैच में दोनों टीमों ने मिलकर 500 से ज्यादा रन बनाए।

6 विकेट के नुकसान पर 187 रन बनाए, कमिंस और रेंशॉ ने संभाला डरबन में पहले ही दिन कंगारू शीर्ष क्रम ध्वस्त

एजेंसी, डरबन

इसके बाद स्टीव स्मिथ और मार्नश लाबुशेन ने मिलकर तीसरे विकेट के लिए 60 रनों की साझेदारी की और पारी को संभालने का काम किया। हालांकि, जब लग रहा था कि ऑस्ट्रेलियाई टीम मैच में वापसी कर रही है, तभी लंच से ठीक पहले साउथ अफ्रीका ने लाबुशेन (37) को आउट करके मेहमान टीम को तीसरा झटका दे दिया। इसके बाद लंच के तुरंत बाद स्मिथ का विकेट गिरते ही ऑस्ट्रेलियाई मिडिल ऑर्डर बेबस नजर आने लगा। इस मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई टीम को दो बड़े झटके लगे। कैमरन ग्रीन पेट में खिचाव के कारण मैच से बाहर हो गए, जबकि जोश इग्लिस उंगली में फ्रैक्चर के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं थे।

ऑस्ट्रेलिया-ए ने इंडिया-ए को 69 रन से हराया

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया-ए ने तीन मैचों की वनडे सीरीज के दूसरे मैच में इंडिया-ए को 69 रन से हरा दिया। इसके साथ ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज में 2-0 की बढ़त बना ली। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.5 ओवर में 275 रन बनाए। इसके जवाब में इंडिया ए की टीम 45.2 ओवर में 206 रन पर सिमट गई। भारत के लिए रजत पाटीदार ने 67 रन बनाए। अनुकूल रॉय ने नाबाद 34 रन की पारी खेली, लेकिन दोनों पारियों टीम को जीत नहीं दिला सकी। इंडिया ए के टॉप ऑर्डर में साई सुरेशन, देवदत्त पडिक्कल और कप्तान त्हात्राज गायकवाड नहीं चल सके। ऑस्ट्रेलिया के लिए स्पेंसर जॉनसन ने सबसे ज्यादा तीन विकेट लिए। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। सुरेशन 13 रन बनाकर आउट हुए। पडिक्कल ने एक रन बनाया।

यह उपलब्धि उनकी मेहनत, लगन और निरंतर अच्छे प्रदर्शन का परिणाम है। उनकी भागीदारी से भोपाल और मध्य प्रदेश में क्यू स्पोर्ट्स को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ उभरते हुए खिलाड़ियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

सैमसन ने खेती 82 रनों की धुंआधार पारी



टी20 में सबसे बड़े टारगेट चेज

259 : दक्षिण अफ्रीका बनाम वेस्टइंडीज, सेगुरियम, 2023
250 : वेस्टइंडीज बनाम भारत, रांची, 2026
244 : ऑस्ट्रेलिया बनाम न्यूजीलैंड, ऑकलैंड, 2018
244 : बुल्गारिया बनाम जिब्राल्टर, सोफिया, 2025
243 : बुल्गारिया बनाम सर्बिया, सोफिया, 2022
232 : वेस्टइंडीज बनाम दक्षिण अफ्रीका, जोहान्सबर्ग, 2015
230 : इंग्लैंड बनाम दक्षिण अफ्रीका, मुंबई, 2016

टी20 में सर्वाधिक कुल रन वाले मैच

517 - दक्षिण अफ्रीका बनाम वेस्टइंडीज, सेगुरियम, 2009
501 - भारत बनाम वेस्टइंडीज, रांची, 2026
499 - भारत बनाम इंग्लैंड, मुंबई विश्वकप 2026 समीक्षाइनल
496 - भारत बनाम न्यूजीलैंड, तिरुवनंतपुरम, 2026
489 - वेस्टइंडीज बनाम भारत, लंडनहिल, 2016

संजू का तूफान आया

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम को अभिषेक शर्मा ने तेज शुरुआत दी। अभिषेक ने 12 गेंदों पर 20 रन की पारी खेली अभिषेक के आउट होने के बाद संजू सैमसन का तूफान आया। उन-ईशान किशन का साथ मिला। संजू ने 21 गेंदों पर अर्धशतक लगाया। यह वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत की ओर से संयुक्त रूप से सबसे तेज फिफ्टी है। इससे पहले विराट कोहली ने भी 2019 में वानखेड़े में 21 गेंदों में फिफ्टी जड़ी थी। हालांकि, इस दौरान संजू को कुछ जीवनदान भी मिले। इसका उन-होंने भरपूर फायदा उठाया।

स्कोर बोर्ड

भारत	रन	बॉल	4s	6s
अभिषेक के गुडाकेश बो रॉस्टन	20	12	2	1
सैमसन के पून बो शमर	82	41	9	4
ईशान किशन बोल्ड रॉस्टन	43	22	6	2
शिवम दुबे बोल्ड रॉस्टन	7	10	1	0
श्रेयस कैशिमरन बो शमर	40	18	3	3
तिलक वर्मा नाबाद	44	18	3	3
नमन धीर नाबाद	4	1	1	0
कुल : 249/5 (20)				
गेंदबाजी: अकील हुसैन (3-0-46-0), रोमारियो शेफर्ड (3.4-0-47-0), रॉस्टन चेज (4-0-24-3), गुडाकेश मोती (2-0-21-0), शमर जोसेफ (3-0-39-0), शमर स्मिथ (4-0-64-2), रोवमन पांवेले (0.2-0-7-0)				
वेस्ट इंडीज	रन	बॉल	4s	6s
शाह होप नाबाद	102	45	6	9
पूरन के विसनोई बो मयंक	4	2	1	0
हेटमायर बोल्ड मयंक	1	1	0	0
रोवमन पांवेले बोल्ड मयंक	24	13	4	1
रदराफोर्ड के सैमसन बो कुलदीप	84	37	7	7
रोमारियो शेफर्ड नाबाद	34	13	3	3
कुल : 252/4 (18.3)				
गेंदबाजी: मयंक यादव (3-0-36-3), अशदीप सिंह (4-0-45-0), अक्षर पटेल (3.3-0-63-0), शिवम दुबे (2-0-30-0), कुलदीप यादव (4-0-53-1), नमन धीर (2-0-25-0)				

गेंदबाजी: मयंक यादव (3-0-36-3), अशदीप सिंह (4-0-45-0), अक्षर पटेल (3.3-0-63-0), शिवम दुबे (2-0-30-0), कुलदीप यादव (4-0-53-1), नमन धीर (2-0-25-0)

एसए20 नीलामी में जेसन राउल्स सबसे महंगे खिलाड़ी

लंदन। एसए20 सीजन-5 की नीलामी में 18 साल के जेसन राउल्स सबसे महंगे खिलाड़ी बने। एमआई केप टाउन और जोबर्ग सुपर किंग्स के बीच उन्हें खरीदने के लिए होड़ लगी। जोबर्ग सुपर किंग्स के हेड कोच अल्बो मोर्कल ने कहा कि इतनी बड़ी बोली की उम्मीद नहीं थी, हालांकि फ्रेंचाइजी एक साल से राउल्स पर नजर रख रही थी। राउल्स को जोबर्ग सुपर किंग्स ने 2.9 मिलियन रैंड (करीब 1.7 करोड़ रुपए) की बोली लगाकर खरीदा है। उसके पास अभी सिर्फ एक टी-20 मैच का अनुभव है, जिसमें उन्होंने बल्ले से 45 रन और गेंदबाजी में एक विकेट लिया था। सबसे चौकाने वाली बात यह कि राउल्स अभी अपनी पढ़ाई पूरी कर रहे हैं। राउल्स बाएं हाथ से गेंदबाजी करते हैं और बाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हैं।

चैपमैन और फाउल्क्स की जगह टिकनर-क्लाक्सन को मौका

एजेंसी, नई दिल्ली

भारत के खिलाफ पांच मैचों की टी20 सीरीज से पहले न्यूजीलैंड को 2 खिलाड़ी चोटिल हो गए हैं। इनमें मार्क चैपमैन और जैक फाउल्क्स शामिल हैं। दोनों को सीरीज से बाहर कर दिया गया है। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने शुक्रवार को बताया कि चैपमैन की बाई हैमस्ट्रिंग और फाउल्क्स के दाएं हाथ फ्लेक्सर में चोट लगी है। ऑलराउंडर जोश क्लार्क्सन और तेज गेंदबाज ब्लेयर टिकनर को टीम में शामिल किया है। टी-20 सीरीज 22 अक्टूबर से शुरू होगी। मार्क चैपमैन को यूरोपियन टी20 प्रीमियर लीग के पहले सीजन में खेलते समय बाई हैमस्ट्रिंग में चोट लगी। हालांकि, पांच मैचों की वनडे सीरीज में उनकी वापसी की

आफ द मैच खिलाड़ियों को एमपीसीए मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य आदित्य विजय सिंह और वरिष्ठ क्रिकेटर राजेंद्र राव ने पुरस्कृत किया। इस अवसर पर कुमारी दिव्यांगी वर्मा, डॉ. रोहित श्रीवास्तव और डॉ. फारूख खान विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के प्रदर्शन से स्कूली क्रिकेट के प्रति उत्साह और प्रतिस्पर्धा को भावना को दर्शाया।

रणजी में सौराष्ट्र का पहला मुक्राबला खेलेंगे जाडेजा



नई दिल्ली। रणजी ट्रॉफी 2026-27 में छत्तीसगढ़ के खिलाफ सौराष्ट्र के पहले मुकाबले में रवींद्र जाडेजा खेलेंगे, जबकि जयदेव उनादकर दो बार की रणजी विजेता सौराष्ट्र की कप्तानी जारी रखेंगे। वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज में भारत की 2-1 से जीत के बाद जाडेजा को सौराष्ट्र के 16 सदस्यीय दल में जगह मिली है। वनडे सीरीज में जाडेजा ने दो मैच खेले, लेकिन एक भी मुकाबले में उनकी बल्लेबाजी नहीं आई। अगले महीने न्यूजीलैंड दौरे पर भारत के दो टेस्ट से पहले उन्हें लाल गेंद प्रारूप में अभ्यास करने का मौका मिलेगा। वेलिंगटन टेस्ट 19 नवंबर से 23 नवंबर तक खेला जाना है जबकि क्राइस्टचर्च में दूसरा टेस्ट 27 नवंबर से 1 दिसंबर तक खेला जाएगा। रणजी ट्रॉफी का 92वां संस्करण 11 अक्तूबर से शुरू होने का रहा है, सौराष्ट्र पिछले सीजन एक आती चरण से ही बाहर हो गई थी, इस बार वह एलीट ग्रुप बी में आंध्रा, असम, छत्तीसगढ़, हैदराबाद, कर्नाटक, पंजाब और त्रिपुरा के साथ शामिल है। ससेक्स के साथ प्रदर्शन के लिहाज से अच्छा समय बिताने के बाद उनादकर टीम की अगुवाई करेंगे। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने ससेक्स के लिए सात मैचों में 22.21 की औसत से 28 विकेट हासिल किए। जिसमें हैमपशायर के खिलाफ 32 रन देकर पांच विकेट और दो चार विकेट के हॉल शामिल हैं। वह चतन साकरिया के साथ सौराष्ट्र के तेज गेंदबाजी आक्रमण की अगुवाई करेंगे। सौराष्ट्र ने उनादकर की अगुवाई में रणजी ट्रॉफी 2019-20 और 2022-23 का खिताब जीता था। पिछले सीजन के दल से 14 खिलाड़ियों को सौराष्ट्र ने अपने दल में बरकरार रखा है।

एशियन हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी से पाकिस्तान ने नाम वापस लिया

■ न्यूट्रल वेन्यू पर मैच कराने की मांग खारिज
■ अब बांग्लादेश खेलेगा; 27 अक्टूबर से टूर्नामेंट

एजेंसी, नई दिल्ली

भारत में 27 अक्टूबर से होने वाली एशियन हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी 2026 से पाकिस्तान ने नाम वापस ले लिया है। पाकिस्तान हॉकी फेडरेशन ने दोनों देशों के बीच राजनीतिक तनाव का हवाला देते हुए अपने मैच न्यूट्रल वेन्यू पर कराने की मांग की थी। भारत ने टूर्नामेंट को दूसरे देश में कराने से इनकार कर दिया। इसके बाद पाकिस्तान की जगह बांग्लादेश को 6 टीमों के इस टूर्नामेंट में शामिल किया गया है। प्रतियोगिता 5 नवंबर

भारत से सीरीज से पहले न्यूजीलैंड के 2 खिलाड़ी चोटिल, 22 अक्टूबर से सीरीज



उम्मीद है। जैक फाउल्क्स को कैंटरबरी के साथ ट्रेनिंग सेशन के दौरान दाएं हाथ फ्लेक्सर में चोट लगी। उनकी वापसी का समय अभी तय नहीं है। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने अभी यह नहीं बताया है कि फाउल्क्स कब तक वापसी करेंगे। न्यूजीलैंड के हेड कोच रॉब वाल्टर ने भारत के खिलाफ चुनौतीपूर्ण सीरीज से पहले जोश क्लार्क्सन और ब्लेयर

टिकनर की वापसी पर खुशी जताई। वाल्टर ने कहा, 'मार्क और जैक के लिए मुझे बहुत दुख है। मैं दोनों के जल्द ठीक होने की कामना करता हूँ।' उन्होंने कहा, 'हम खुशकिस्मत हैं कि जोश और ब्लेयर के अनुभव का फायदा उठा सकते हैं। मुझे पता है कि दोनों उस सीरीज का हिस्सा बनने को लेकर उत्साहित हैं, जो शानदार T20 सीरीज बनने वाली है।

दूसरे मुकाबले में डीपीएस नीलबड़ ने निर्धारित 25 ओवर में सात विकेट पर 223 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया। रबजीत सिंह ने 61 गेंदों पर 100 रन की शतकीय पारी खेली। युग रघुवंशी ने 33 गेंदों पर 39 रन, राघव गोहिल ने नौ गेंदों पर 24 रन और शुभमोय डॉन ने 23 रन बनाए। जतिन मंधानी ने भी छह गेंदों पर 15 रन जोड़कर टीम को तेजी दी। 224 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए डीपीएस कोलार की टीम निर्धारित 25 ओवर में चार विकेट पर 143 रन ही बना सकी। रिविय माहेश्वरी ने 63 गेंदों पर नाबाद 68 रन बनाए, जबकि धैर्य अदलखा ने 33 रन का योगदान दिया। हालांकि, टीम लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकी और डीपीएस नीलबड़ ने 80 रन से मुकाबला जीत लिया। राघव गोहिल, तेजस सिंह, युग रघुवंशी, रबजीत सिंह और खुशवंत सिंह ने गेंदबाजी में योगदान दिया। रबजीत सिंह को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

